kissekahani.com

तब भट्टी ने चुपके से चारों ओर दूत इस भेद का पता लगाने के लिए भेजे।

उधर राजा विक्रमादित्य जंगल में तोते का शरीर छोड़ कर अपने शरीर में लौटना चाहता था।

जब वह उस स्थान पर गया जहाँ उसने अपना शरीर छोड़ा था तो यह देखकर कि शरीर वहाँ नहीं था बड़ा व्याकुल हुआ।

वनाजी भी वहाँ से गायब था। राजा परेशान था कि क्या करे।

वह पता लगाने के लिए इधर उधर उड़ा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हुआ है, कुछ दूर पर उसने आग जलती हुई देखी। नज़दीक जाने पर पता लगा कि उसमें वनाजी का शरीर जल रहा है।

तब राजा विक्रमादित्य समझ गया कि वनाजी ने उसके साथ धोखा किया है।

अब राजा को तोते के रूप में ही रहना पड़ेगा।

kissekahani.com

कुछ दिन पश्चात् तोते को एक शिकारी ने पकड़ लिया और एक धनी व्यापारी के हाथ बेच दिया। व्यापारी तोते को पाकर बहुत प्रसन्न था क्योंकि तोता आदमियों की तरह बोल सकता था।

व्यापारी को एक दिन सपना आया कि वह अपरानजी नामक एक प्रसिद्ध नर्तकी का नृत्य देखने गया है। सपने की बात उसने कई लोगों से कही। होते होते यह बात अपरानजी तक भी जा पहुँची।

नर्तकी को बड़ा क्रोध आया कि कोई बिना मूल्य चुकाये ही उसके नृत्य का आनन्द उठाये। उसने व्यापारी से एक सौ मोहरों की माँग की। व्यापारी ने मोहरें देने से इनकार कर दिया। अपरानजी ने सारा मामला कचहरी में पेश किया।

व्यापारी की समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या करे। उसका तोता बोला कि वह इस मामले में उसके वकील का कार्य करेगा। उसने व्यापारी को कचहरी जाने की सलाह दी तथा कहा कि साथ में सौ मोहरें और एक शीशा भी लेता जाये।

कचहरी में मामला पेश हुआ। व्यापारी और अपरानजी दोनों उपस्थित थे। अपरानजी ने बड़ी गर्मी से मोल की राशि का दावा किया।

तोते ने व्यापारी से कहा कि मोहरें न्यायाधीश के सामने रख दे।

"और," तोता बोला--"मोहरों के पीछे शीशा भी रख दो।"

मोहरों को देखते ही अपरानजी उन्हें उठाने के लिए आगे बढ़ी।

"रुको!" तोता चिल्लाया--"तुम्हारे दावे का आधार एक सपना है जिसका आनन्द व्यापारी ने सोते हुए लिया। तुम भी इन मोहरों के पाने का आनन्द शीशे में देखकर ले सकती हो।"

न्यायाधीश तोते की बात से सहमत हुआ। अपरानजी को एक पक्षी

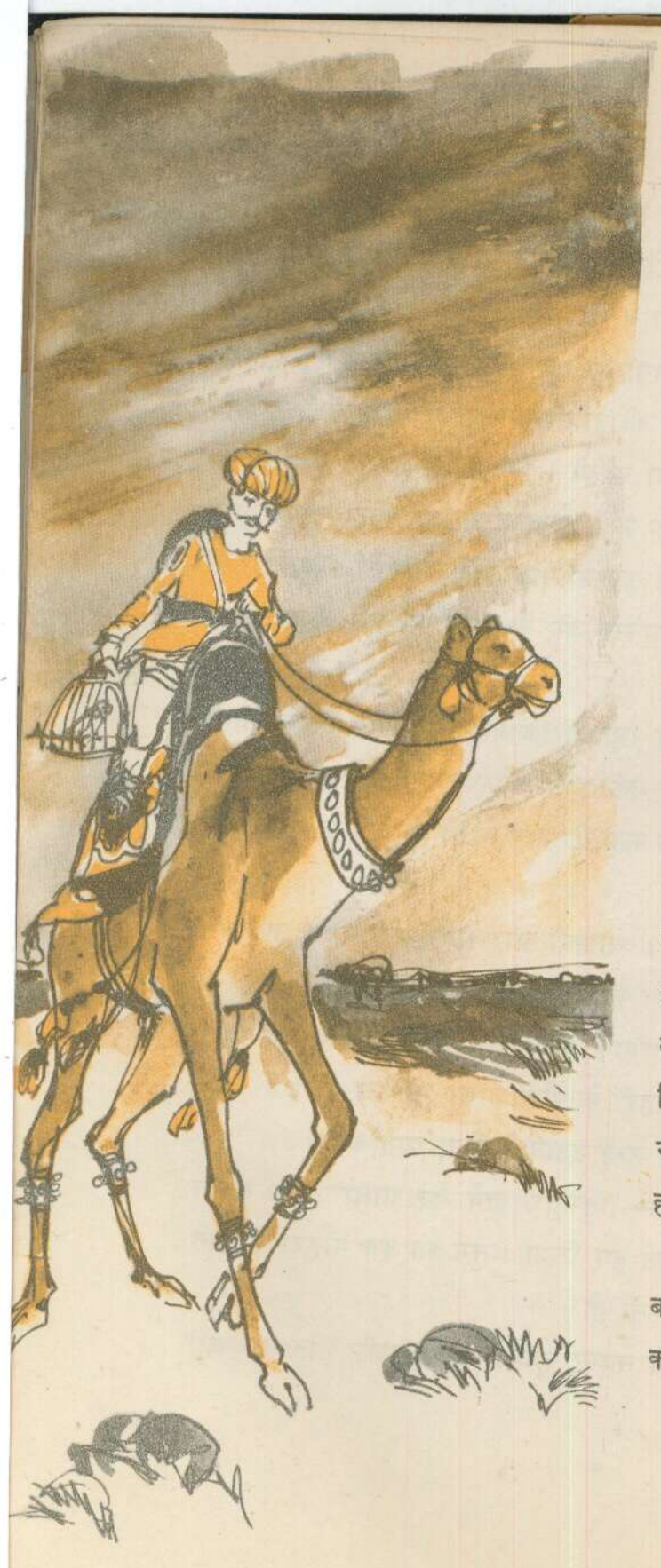

द्वारा पराजित होने से बहुत बुरा लगा।

इस बुद्धिमान तोते का समाचार भट्टी तक भी पहुँचा। तत्काल वह तोते को देखने के लिए चल पड़ा।

उसे एकदम पता चल गया कि तोता राजा विक्रमादित्य के सिवाय दूसरा कोई नहीं है।

भट्टी तोते को उज्जैन ले आया। वहाँ उसने तोते को गोपनीय रूप से एक कमरे में रखा। भट्टी और तोते में विचार विमर्श हुआ कि वनाजी से राजा का शरीर कैसे वापिस लिया जाये।

अभी तक पाखण्डी वनाजी रानी से न मिलने पाया था। रानी से मिलने की उसने बहुत बार चेष्टा की थी लेकिन रानी सदा कोई न कोई बहाना बना देती थी। अब उसे सूचना दी गई कि रानी उससे नहीं मिल सकती क्योंकि रानी के प्रिय तोते की अचानक मृत्यु हो गई है।

वनाजी रानी की नज़रों में अच्छा बनना चाहता था। रानी को प्रसन्न करने के लिए थोड़े समय के लिए तोते

को जीवित करने के लिए वह सहमत हो गया। रानी ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। वनाजी ने विक्रमादित्य का शरीर छोड़ कर तोते के शरीर में प्रवेश किया और उड़ कर रानी के पास गया।

उसी क्षण राजा विक्रमादित्य ने भी अपने शरीर में प्रवेश कर लिया।

भट्टी ने रानी को सूचना दी कि अब राजा वास्तविक राजा है और पहले जैसा पाखण्डी नहीं। राजा और रानी एक दूसरे को पाकर बहुत प्रसन्न हुए।

वनाजी को तोते के रूप में ही रहना पड़ा, इसलिए वह वहाँ से उड़ गया।

kissekahani.com

नाग राय

कशमीर में एक घना जंगल था। उसके बीचोबीच एक सुन्दर नदी बहती थी।

नदी के भीतर बहुत गहराई पर एक रास्ता नागों के राज्य को जाता था। नाग ऐसे साँप थे जिनके पास दैवी शक्तियाँ थीं।

नाग राजा के बहुत से बच्चे थे। सबसे बड़ा राजकुमार बहुत बुद्धिमान और शिक्षित था। उसने नदी के ऊपर की दुनिया के बारे में जहाँ मनुष्य रहते थे बहुत कुछ सुना था। उसकी बड़ी अभिलाषा थी कि बाहर के संसार और वहाँ के लोगों को देखे लेकिन उसके पिता उसे बाहर नहीं जाने देना चाहते थे।

कई बार नाग राजा, उसका परिवार तथा उनके सेवक मनुष्य का रूप बदल कर नदी के बाहर जंगल में रात

kissekahani.com

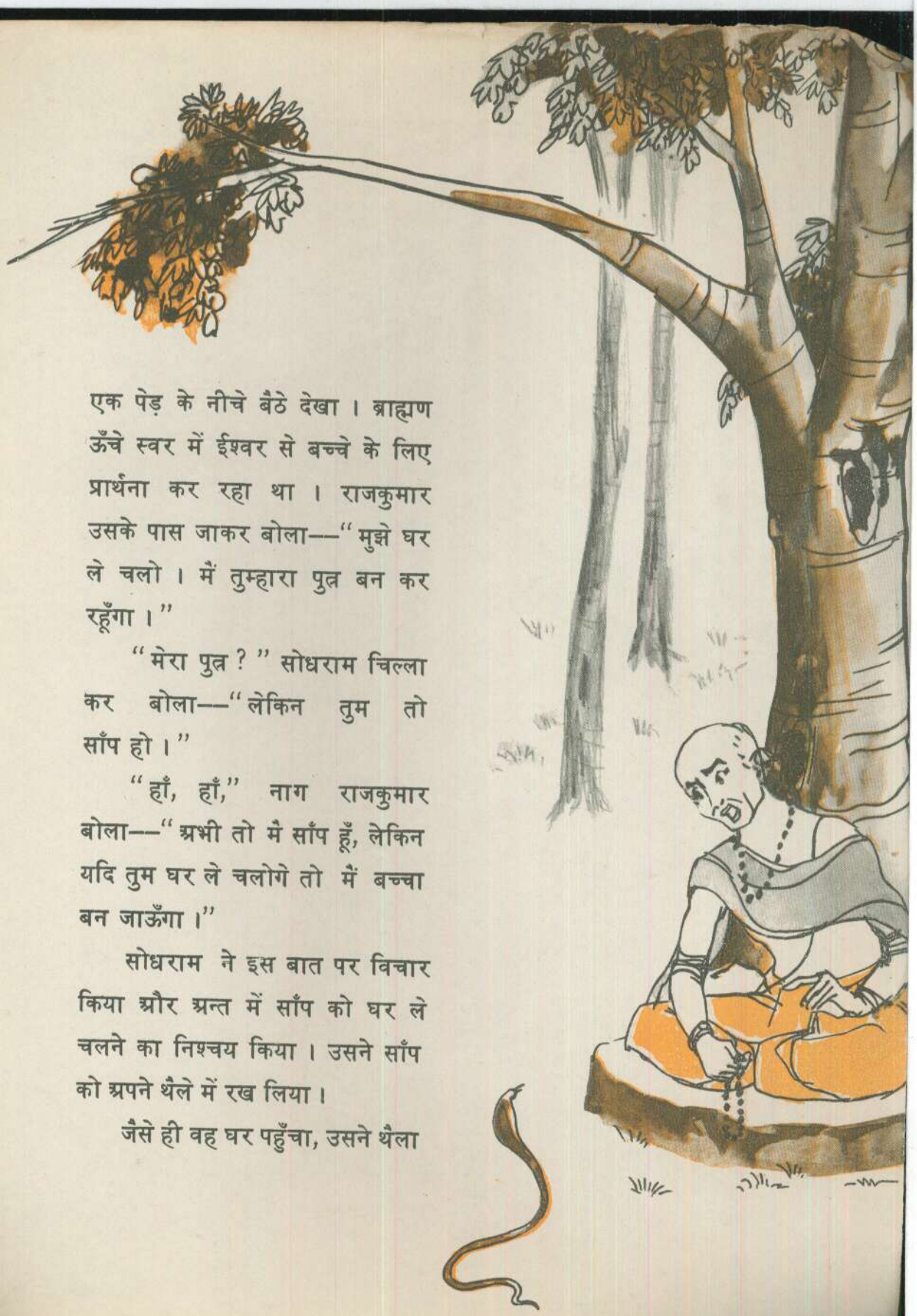

एक पेड़ के नीचे बैठे देखा । ब्राह्मण ऊँचे स्वर में ईश्वर से बच्चे के लिए प्रार्थना कर रहा था । राजकुमार उसके पास जाकर बोला—"मुझे घर ले चलो । मैं तुम्हारा पुत्र बन कर रहूँगा ।"

"मेरा पुत्र ?" सोधराम चिल्ला कर बोला—"लेकिन तुम तो साँप हो ।"

"हाँ, हाँ," नाग राजकुमार बोला—"अभी तो मै साँप हूँ, लेकिन यदि तुम घर ले चलोगे तो मैं बच्चा बन जाऊँगा ।"

सोधराम ने इस बात पर विचार किया और अन्त में साँप को घर ले चलने का निश्चय किया । उसने साँप को अपने थैले में रख लिया ।

जैसे ही वह घर पहुँचा, उसने थैला

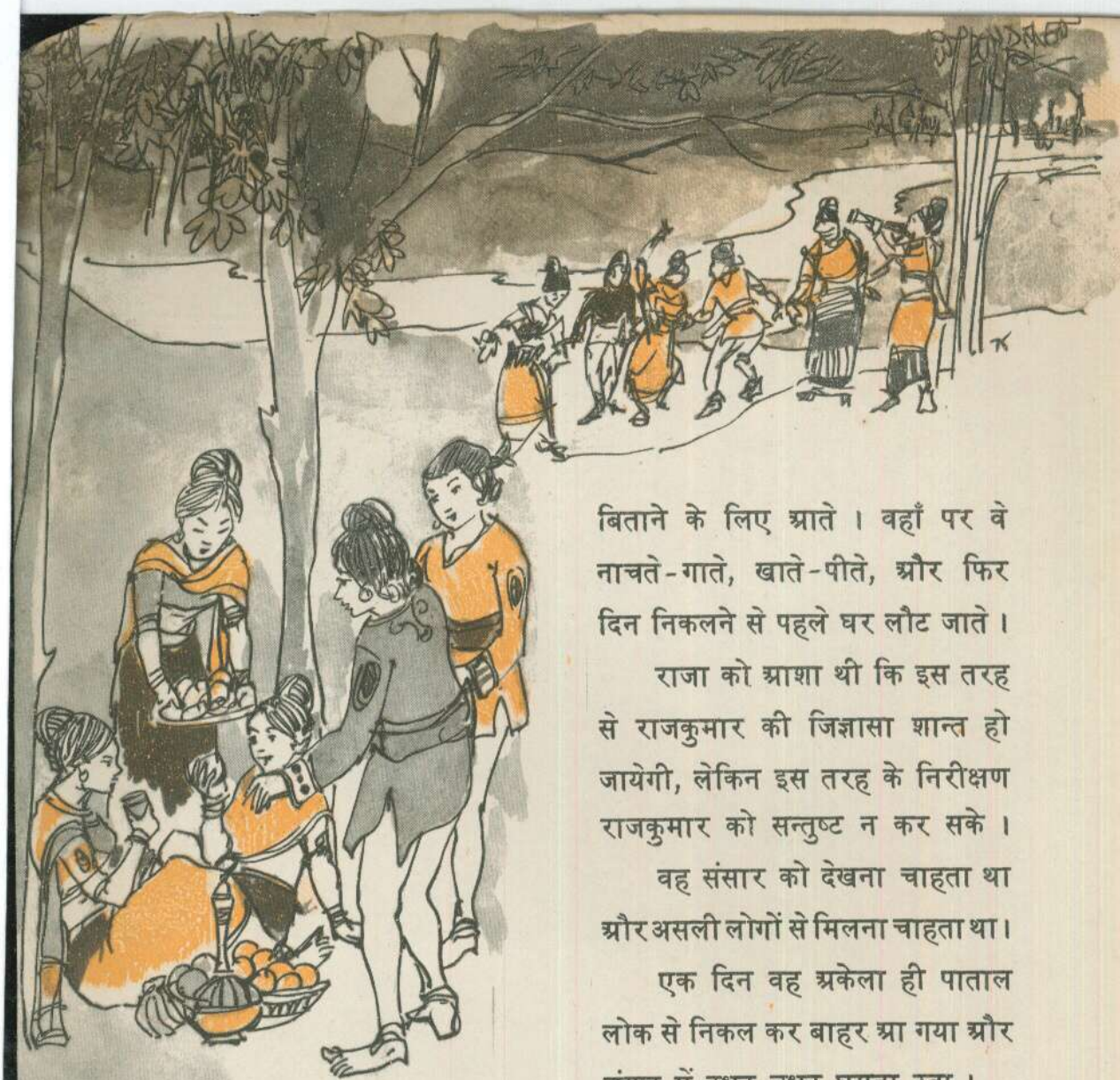

बिताने के लिए आते । वहाँ पर वे नाचते-गाते, खाते-पीते, और फिर दिन निकलने से पहले घर लौट जाते ।

राजा को आशा थी कि इस तरह से राजकुमार की जिज्ञासा शान्त हो जायेगी, लेकिन इस तरह के निरीक्षण राजकुमार को सन्तुष्ट न कर सके ।

वह संसार को देखना चाहता था और असली लोगों से मिलना चाहता था।

एक दिन वह अकेला ही पाताल लोक से निकल कर बाहर आ गया और जंगल में इधर उधर घूमता रहा ।

इस समय सोधराम नामक एक ब्राह्मण यात्री जंगल में से गुज़र रहा था । उसके कोई बच्चा नहीं था । यह यात्रा वह पुत्र प्राप्ति की आशा से ही कर रहा था ।

नाग राजकुमार ने सोधराम को

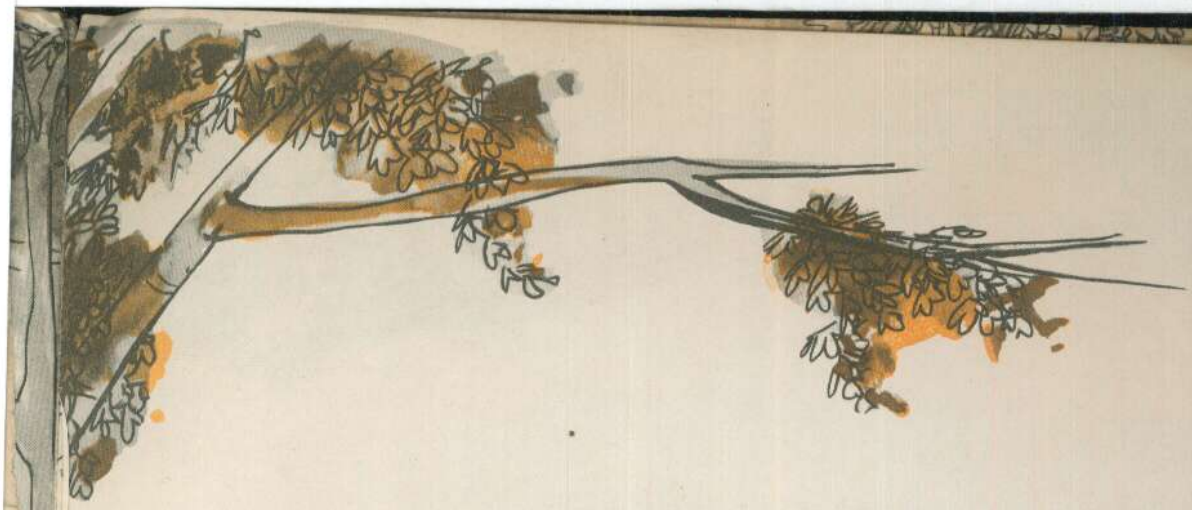

एक कमरे में रख कर अपनी पत्नी को बुलाया ।

"मैं तुम्हारे लिए पुत्र लाया हूँ," वह बोला—"उस कमरे में है वह, भीतर जाकर देखो ।"

उसकी पत्नी कमरे में गई । वहाँ पर वह नौ दस वर्ष के एक बहुत सुन्दर बालक को देख कर चकित रह गई ।

"हमारे पर ईश्वर ने कृपा की है," सोधराम की पत्नी बोली—"तुम्हारी यात्रा सफल हुई ।"

सोधराम ने कमरे में झाँककर देखा । वह बड़ा प्रसन्न हुआ कि साँप की बात सच निकली ।

"पिता जी," बालक बोला—"मैं आपका पुत्र हूँ मुझ से प्यार करिए और मेरे ऊपर अपनी कृपा रखिए ।"

सोधराम और उसकी पत्नी सुन्दर तथा चतुर पुत्र पाकर बहुत प्रसन्न थे । उसका नाम उन्होंने नागराय रखा और उस का लालन-पालन बड़ी सावधानी से करने लगे ।

गाँव के सब लोग बालक को बहुत प्यार करते थे । वे उसको मिठाई और उपहार भी देते ।

बालक समय के साथ एक सुन्दर और बलवान युवक बना ।

"पिता जी", नागराय ने एक दिन सोधराम से कहा—"यहाँ पास में कोई

अच्छा तालाब है जहाँ मैं तैरने के लिए जा सकूँ। ?"

"यहाँ पर एक ही ऐसा तालाब है," सोधराम ने उत्तर दिया—"लेकिन है वह महल के उपवन में। यह वही तालाब है जहाँ राजकुमारी हिमल स्नान करती है।"

"उस तालाब का रास्ता मुझे दिखा दीजिए।" नागराय बोला।

"तुम वहाँ नहीं जा सकते हो," सोधराम ने उत्तर दिया—"महल के दरवाज़े का चौकीदार तुम्हें भीतर नहीं जाने देगा।"

"वह सब इन्तज़ाम मैं कर लूँगा," नागराय बोला।

सोधराम नागराय को महल के दरवाज़े तक ले गया और बोला—"तालाब इन दीवारों के भीतर है।"

नागराय दीवार के साथ-साथ चलता हुआ उस स्थान पर पहुँचा जहाँ एक नाली द्वारा पानी बाहर गिर रहा था। उसने साँप का रूप धारण किया और नाली के रास्ते से तालाब मे प्रवेश कर गया। भीतर जाकर वह फिर मनुष्य रूप में आ गया।

kissekahani.com

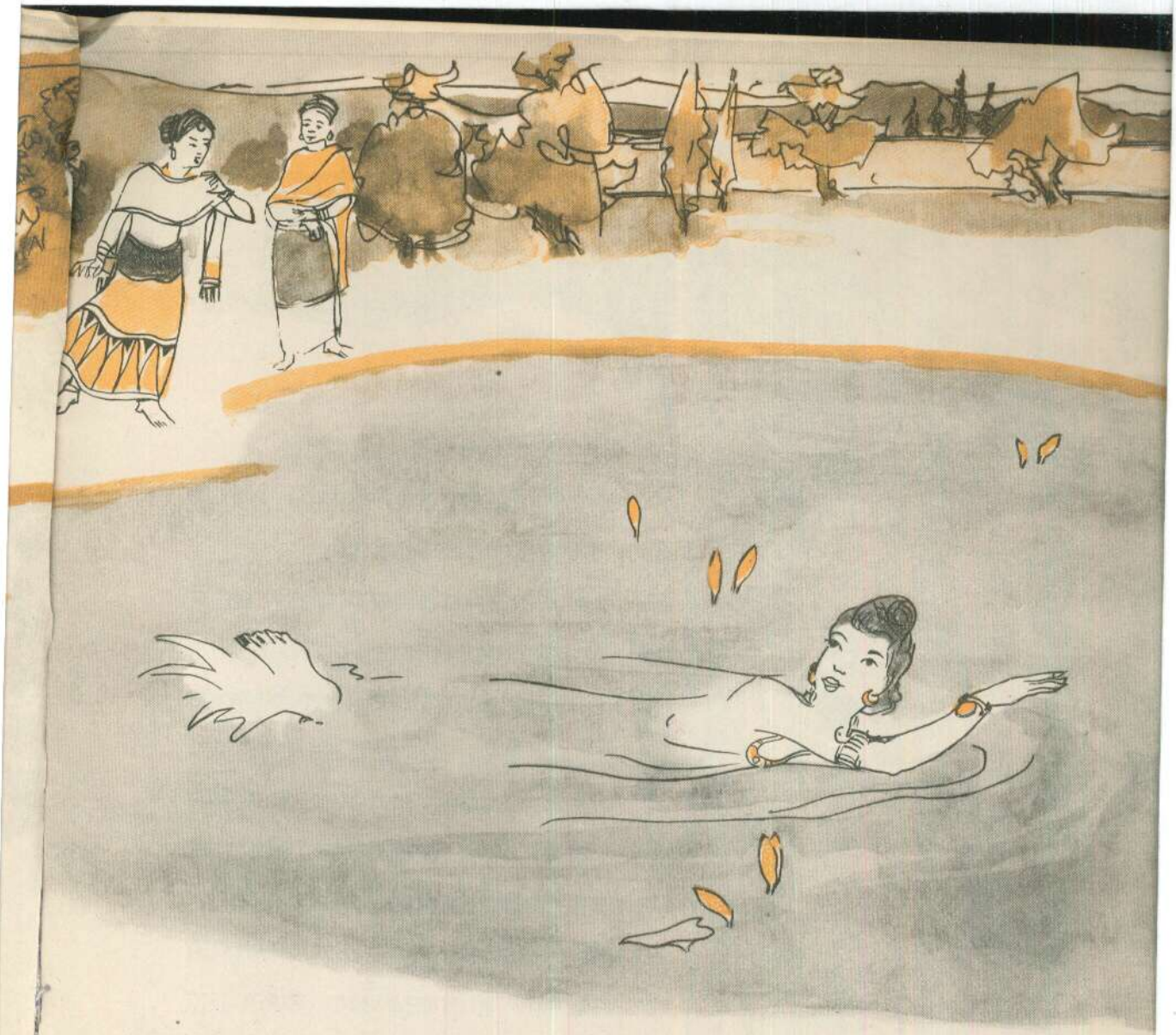

उसने अपने कपड़े उतारे और पानी में कूद कर तैरने लगा । राजकुमारी हिमल बाग में थी। उसे तालाब में किसी के तैरने की आवाज़ सुनाई दी और देखने के लिए कि कौन है, वह वहाँ गई। वहाँ पर उसने एक अति सुन्दर नवयुवक को तैरते हुए देखा। वह उसी क्षण से उससे प्रेम करने लगी।

नागराय ने भी राजकुमारी को देखा। झट वह पानी से बाहर निकलकर अपने कपड़े पहन कर वहाँ से भागा। दीवार के पास पहुँचकर उसने फिर साँप-

kissekahani.com

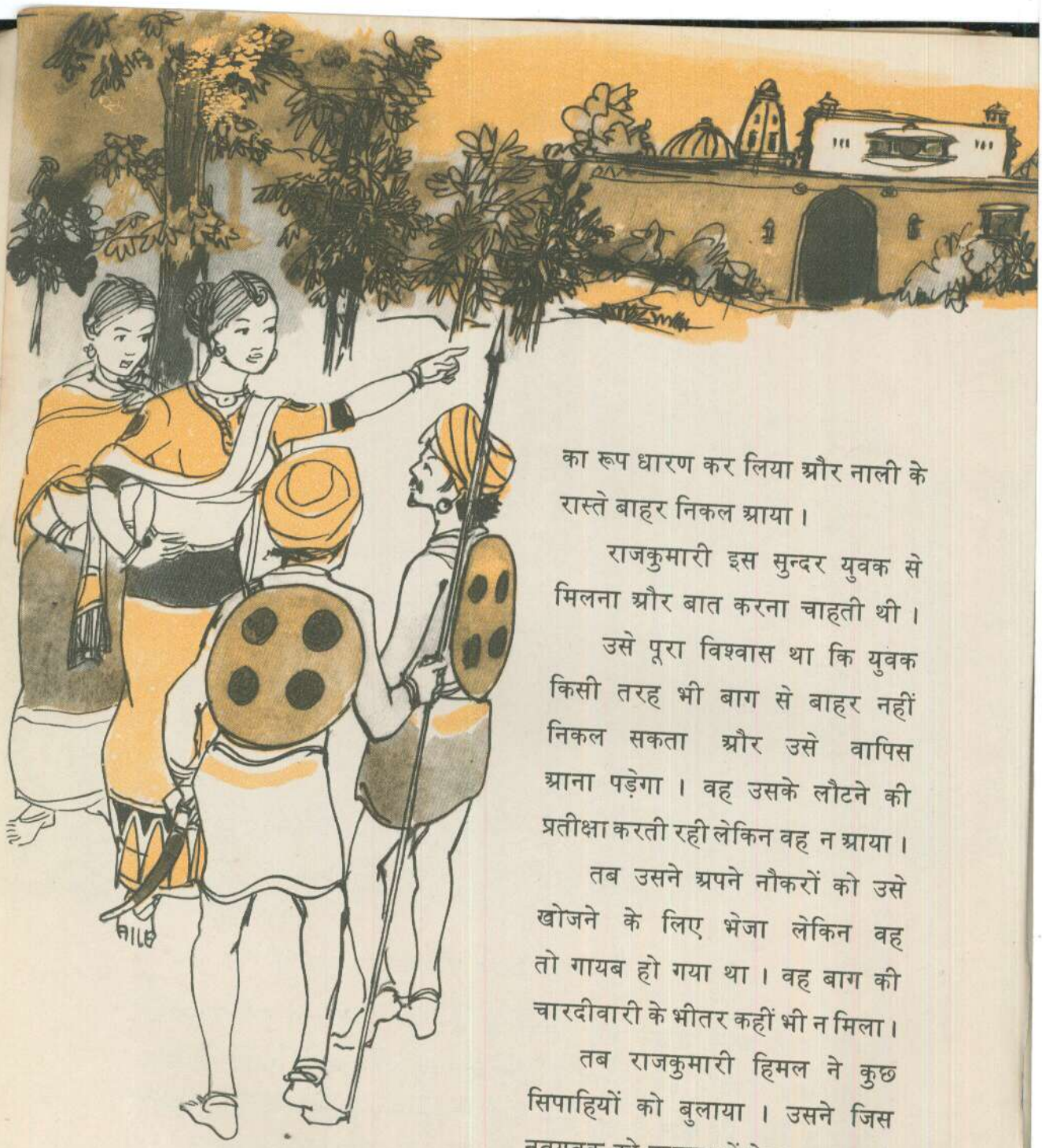

का रूप धारण कर लिया और नाली के रास्ते बाहर निकल आया।

राजकुमारी इस सुन्दर युवक से मिलना और बात करना चाहती थी।

उसे पूरा विश्वास था कि युवक किसी तरह भी बाग से बाहर नहीं निकल सकता और उसे वापिस आना पड़ेगा। वह उसके लौटने की प्रतीक्षा करती रही लेकिन वह न आया।

तब उसने अपने नौकरों को उसे खोजने के लिए भेजा लेकिन वह तो गायब हो गया था। वह बाग की चारदीवारी के भीतर कहीं भी न मिला।

तब राजकुमारी हिमल ने कुछ सिपाहियों को बुलाया। उसने जिस नवयुवक को तालाब में देखा था उसका पूरा विवरण देकर उन्हें बाहर खोजने के लिए कहा।

सिपाहियों ने लौटकर बताया कि

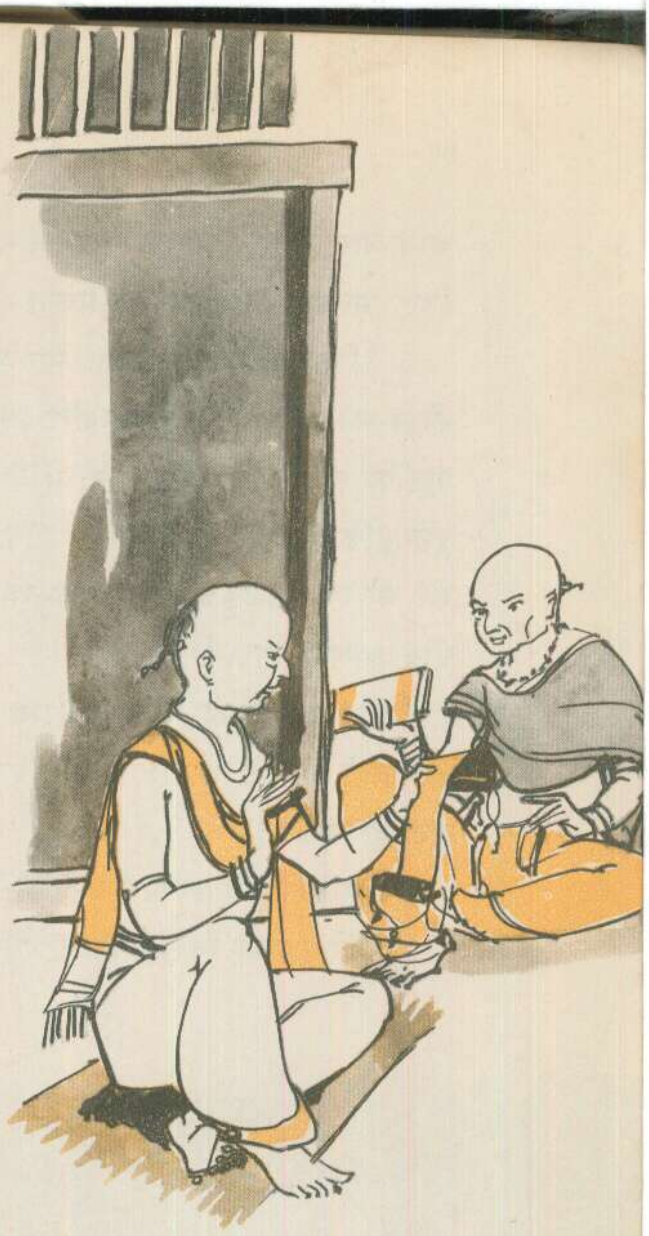

विवरण के अनुसार एक युवक मिला तो लेकिन वह एक गरीब ब्राह्मण का बेटा है।

अब राजकुमारी को यह जानने की उत्सुकता हुई कि क्या यह नवयुवक वही है जिसको उसने बाग में देखा था।

उसने पुरुष का भेष बनाया और सिपाहियों के साथ सोधराम के घर की ओर चल पड़ी। वहाँ उसने युवक कोदेखा।

उसका विचार पक्का हो गया कि यह वही युवक था जिसे उसने तालाब में तैरते देखा था।

राजकुमारी हिमल पिता के पास गई और उन्हें बताया कि उसने सोधराम के पुत्र से विवाह करने का फैसला किया है। उसके पिता की इच्छा थी कि वह किसी राजकुमार से विवाह करे लेकिन राजकुमारी इस बात से सहमत न थी। वह तो अपने द्वारा चुने हुए युवक से ही विवाह करना चाहती थी। अन्त में पिता को भी उसकी बात माननी ही पड़ी।

राजा ने सोधराम को संदेशा भेजा कि दूसरे दिन राजकुमारी हिमल का विवाह नागराय के साथ महल में होगा।

नागराय प्रसन्न था और उसने इस प्रस्ताव को जल्दी से स्वीकार कर लिया।

सोधराम और उसकी पत्नी भी बहुत प्रसन्न थे, लेकिन उन्हें एक चिन्ता

खाये जा रही थी। उनके पास धन नहीं था। वे बारात के जलूस और बहू के लिए मूल्यवान उपहारों का प्रबन्ध कैसे करेंगे।

"पिता जी, आप चिन्ता मत कीजिए, सब ठीक हो जाएगा," नागराय बोला—"यह अँगूठी लीजिए और जाकर उसी नदी में डाल दीजिए जहाँ आपने पहलेपहल मुझे देखा था। नदी में से एक सिपाही बाहर आयेगा और आप से पूछेगा कि आपको क्या चाहिए। आप उससे कहना कि उन सब चीज़ों का प्रबन्ध करे जो एक राजकुमार का राजकुमारी से विवाह होते समय चाहिए। फिर आप आजाइएगा।"

सोधराम अँगूठी लेकर नागराय के कहने के अनुसार नदी पर गया और उसे पानी में डाल दिया। तत्काल एक सिपाही ऊपर आया और उसके सामने खड़ा हो गया।

"आपकी क्या इच्छा है?" उसने सोधराम से पूछा।

"मेरे पुत्र का विवाह कल राजकुमारी हिमल से हो रहा है," सोधराम ने

उत्तर दिया––"ऐसी बारात तथा उपहारों का प्रबन्ध करो जो राजकुमार के योग्य हों।"

फिर सोधराम घर लौट आया।

थोड़े समय पश्चात् ही वहाँ एक बारात, सिपाहियों, दरबारियों और बाजे-गाजे के साथ आ पहुँची। उसके साथ बहुत सारे नौकर भी थे जो बड़े बड़े सन्दूक उठाये हुए थे। इन में सुन्दर कपड़े और गहने थे। सबसे पीछे राजकुमार दूल्हे के चढ़ने योग्य एक सुन्दर सजा हुआ सफेद घोड़ा भी था।

सोधराम, उसकी पत्नी तथा नागराय ने एक सन्दूक में से कपड़े और गहने निकाल कर पहन लिए और विवाह के लिए तैयार हो गये। बारात चल पड़ी।

बहुत लम्बा और शानदार जलूस था। नागराय सब तरह से राजकुमार लगता था। जब राजा ने यह शानदार बारात देखी तो उसकी प्रसन्नता की सीमा न रही। विवाह बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ।

kissekahani.com

राजा ने नये दम्पत्ति के रहने के लिए एक महल दिया। सोधराम और उसकी पत्नी घर लौट आये।

बाजेवाले, सिपाही, और सेवक सब नागलोक को लौट गये जहाँ से वे आये थे। उन्होंने लौटकर नागराज को राजकुमार के बारे में बताया। नागलोग यह सुनकर ज़रा भी खुश न हुए कि नाग राजकुमार ने एक मानवी राजकुमारी से विवाह कर लिया है और मनुष्यों में रहने लगा है।

कुछ नाग कन्यायें तो हिमल से ईर्ष्या करने लगीं। वे किसी मूल्य पर भी राजकुमार को नागलोक में लौटा लाना चाहती थीं। लेकिन किसी की समझ में यह नहीं आ रहा था कि यह कैसे सम्भव हो सकता था।

"यदि किसी तरह राजकुमार एक बार जंगल वाली नदी में आ जाये," एक नाग बोला "तो हम उसे खींचकर घर वापिस ले आयेंगे।"

एक वृद्ध नाग बोला कि वह ऐसा करने का प्रयत्न करेगा। उसने एक

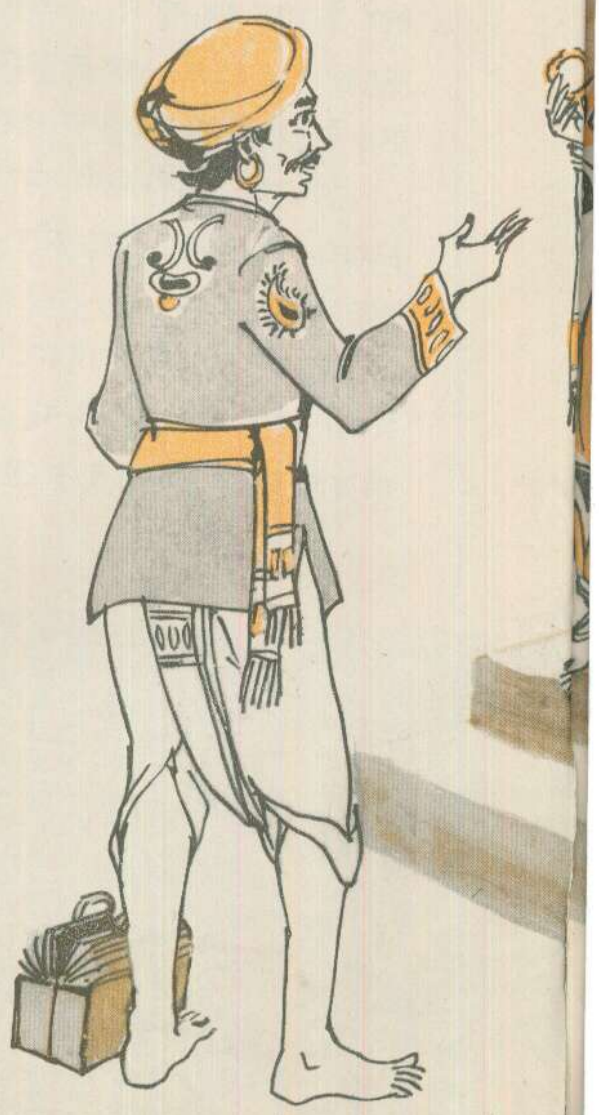

kissekahani.com

विदेशी व्यापारी का रूप धारण किया और कुछ कीमती गहने बेचने के लिए हिमल के पास जा पहुँचा।

व्यापारी ने हिमल को बहुत ही सुन्दर जड़ाऊ कड़ा दिखाया। हिमल को यह कड़ा बहुत पसन्द आया।

"यह कड़ा बड़ा सुन्दर है," वह बोली—"इसका जोड़ा मैं खरीद लूँगी।"

"जोड़ा," व्यापारी बोला—"मुझे खेद है कि मेरे पास केवल एक ही है। जोड़ा मेरे पास था तो सही लेकिन एक रास्ते में खो गया। जंगल में नदी के किनारे मैं पानी पीने के लिए रुका था, एक कड़ा पानी में गिर गया। बहुत ढूँढ़ा लेकिन सब कोशिश बेकार रही क्योंकि मुझे बहुत अच्छी तरह तैरना नहीं आता।"

"यह नदी कहाँ है ?" हिमल ने पूछा। "मेरे पति बड़े अच्छे तैराक हैं। वह मेरे लिए अवश्य खोज कर ला देंगे।"

"लेकिन यदि तुम ने अपने पति से सिर्फ यह कहा कि नदी में कड़ा गिरा

हुआ है तो शायद वह तुम्हारा विश्वास ही न करे," व्यापारी हिमल से बोला, —"तुम अपने पति को नदी पर ले जाना और अपना कड़ा नदी में इस तरह गिरा देना कि जैसे यह किसी दुर्घटनावश हुआ है। फिर निश्चित ही वह इस कड़े को खोजने के लिए पानी में उतरेगा। जब वह कड़ा ले आये तो तुम उससे कहना कि यह तो वह कड़ा नहीं है जो तुम से गिरा था। तब वह और खोज करेगा और इस प्रकार से वह दूसरा कड़ा भी खोज लायेगा।"

हिमल को यह योजना पसन्द आई। केवल इसी तरीके से उसे दोनों कड़े मिल सकते थे। उसने व्यापारी से नदी के बारे में पूछा। व्यापारी ने उसे वहाँ पहुँचने का रास्ता बता दिया। व्यापारी ने उसे कड़ा भी दे दिया और बोला कि वह बाद में आकर दोनों कड़ों का मोल इकट्ठा ले लेगा।

उसके दूसरे दिन ही हिमल और उसका पति जंगल में गये और हिमल उसे नदी पर ले गई। वहाँ पर जैसे ही वह पानी पीने लगी उसने अपना कड़ा नदी में गिरा दिया।

"अरे, हाय, मेरा कड़ा खो गया," वह चिल्लाई—"कृपा कर के मेरा कड़ा खोज दो।" नागराय नदी में किसी दशा में भी घुसना नहीं चाहता था। उसे डर था कि यदि वह नदी में गया तो नाग उसे घसीटकर नागलोक ले जायेंगे।

"अरे, छोड़ो भी उस कड़े को," वह बोला—"मैं इस से अधिक सुन्दर कड़ा तुम्हें खरीद दूँगा।"

"इस से अच्छा और कड़ा हो ही नहीं सकता," हिमल ने उत्तर दिया—"यह दुनिया में सब से सुन्दर कड़ा था। तुम मुझे उसे खोज कर ला दो।"

"तुम मुझे नदी में जाने के लिए अधिक ज़ोर मत दो," नागराय ने समझाया—"इस कड़े के बारे में भूल जाना ही तुम्हारे लिए अधिक अच्छा होगा।"

"इसे भूल जाऊँ," हिमल बोली—"मैं उस सुन्दर कड़े को कैसे भूल सकती

हूँ ? इस स्थान से मैं उस समय तक नहीं हिलूँगी जब तक मेरा कड़ा वापिस नहीं मिल जाता। यदि तुम मेरी सहायता नहीं करोगे तो मैं स्वयं उसे खोज लूँगी।" नागराय ने उसकी बहुत बार मिन्नत की कि वह उसे नदी में घुसने के

लिए न कहे, लेकिन हिमल ने एक न सुनी। अन्त में जब कोई और चारा न रहा तो नागराय ने पानी में डुबकी लगाई। नाग कन्यायें तो इस अवसर की प्रतीक्षा में ही थीं। जैसे ही नागराय पानी के भीतर घुसा उन्होंने उसे पकड़ लिया और घसीट कर नागलोक ले गयीं।

बहुत देर तक हिमल नागराय की पानी से निकलने की प्रतीक्षा करती रही लेकिन नागराय का कोई पता न था। यहाँ तक कि पानी की तरंगें भी लुप्त हो गई थीं लेकिन नागराय कहीं दिखाई न दिया। अब वह डरी कि कहीं उसका पति डूब न गया हो। उसने नौकरों को आवाज़ लगाई कि आकर उसे बचायें।

नौकर दौड़कर आये और कई पानी में कूदकर नागराय को खोजने लगे। लेकिन नागराय तो क्या उसका शरीर भी न मिला।

जब हिमल को पता चला कि उसने अपना पति खो दिया है तो वह खूब

kissekahani.com

रोई । उसे यह बिछोह सहना कठिन हो गया ।

हिमल लौटकर अपने महल में नहीं जाना चाहती थी । वह जंगल में ही एक कुटिया बनाकर रहने लगी । उसने अपने कीमती कपड़े और गहने उतार दिये और विधवा के साधारण कपड़े पहन लिये । उन यात्रियों और भिखारियों को जो उधर से गुज़रते वह खिलाती-पिलाती और बाकी समय ईश्वर भजन में गुज़ारती ।

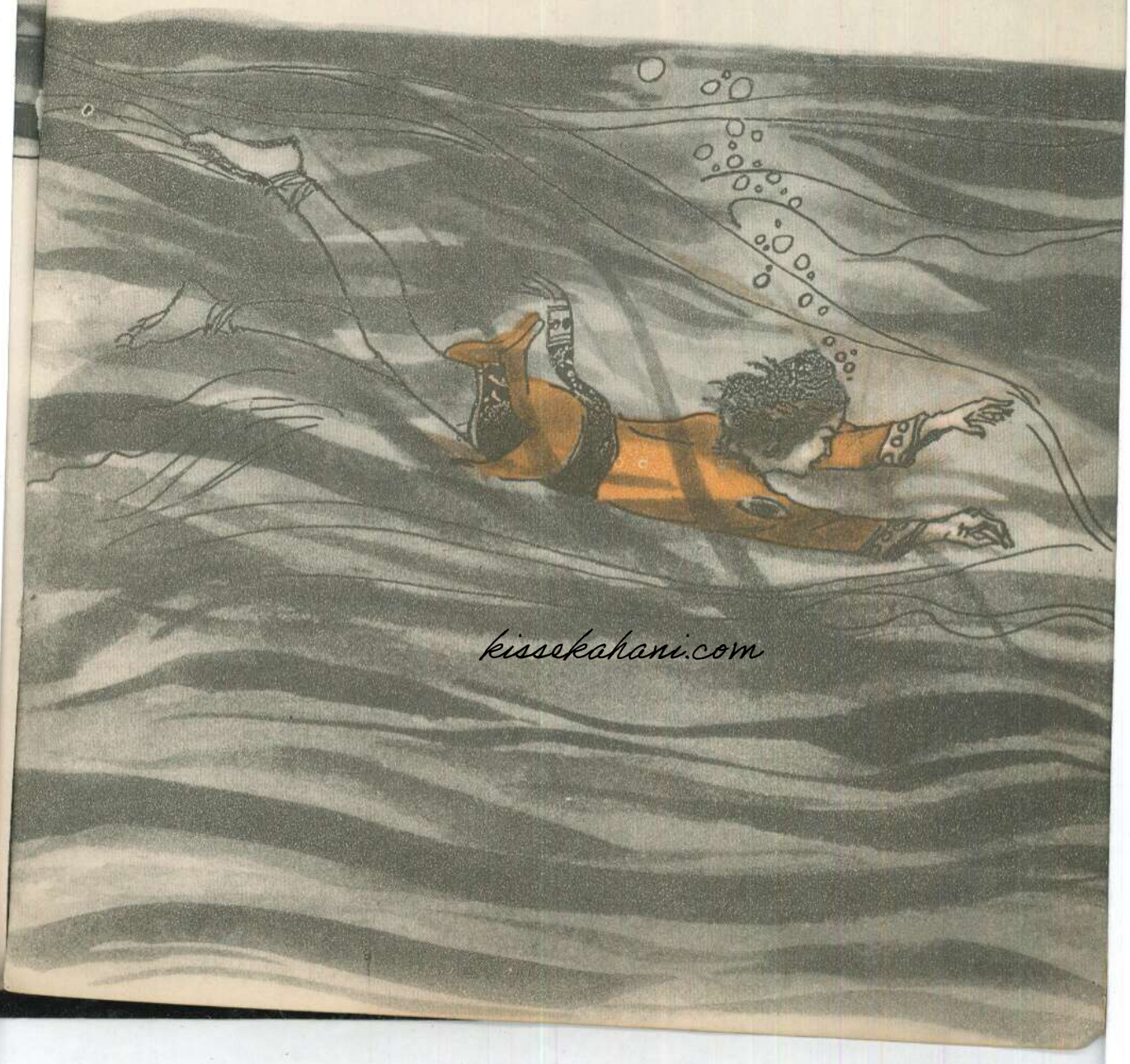

kissekahani.com

एक शाम एक वृद्ध आदमी उसकी कुटिया पर आया। हिमल ने उसे खाना खिलाया और रात बिताने के लिए स्थान भी दिया। समय बिताने के लिए हिमल ने वृद्ध को कोई कहानी सुनाने के लिए कहा।

"अवश्य देवी जी," वृद्ध ने उत्तर दिया—"मैं तुम्हें एक सच्ची कहानी सुनाऊँगा। जो कुछ हुआ उसे मैंने अपनी आँखों से कल रात को देखा है।"

"बताओ, क्या हुआ," हिमल बोली।

"अच्छा सुनो," वृद्ध ने कहना शुरू किया—"पिछली रात को मैंने जंगल में नदी के किनारे एक पेड़ के

नीचे आश्रय लिया, लेकिन मैं ज़रा भी न सो सका।

"आधी रात के समय मैंने नदी में से एक जलूस को निकलते देखा। जलूस में एक राजा-रानी, एक राजकुमार और कई राजकुमारियाँ थीं तथा उनके नौकर चाकर थे। वे यहाँ पर आनन्दमय समय बिताने के लिए आये थे। पहले खूब गाना और बजाना हुआ और फिर एक शानदार भोज। वहाँ बाकी सब तो प्रसन्न थे, लेकिन राजकुमार उदास था।

"भोज के बाद सब वहाँ से जाने लगे। राजकुमार सब से बाद में गया। कुछ सेवक उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे।" वह उनकी ओर मुड़कर बोला "तुम जाओ। मुझे अकेला छोड़ दो। मैं बाद में आजाऊँगा।"

"नहीं, राजकुमार," उन्होंने उत्तर दिया—"रानी जी ने हमें आपकी प्रतीक्षा करने को कहा है।"

"राजकुमार उठा और धीरे-धीरे नदी की ओर चल दिया, लेकिन उसने एक दो बार पीछे मुड़ कर देखा।

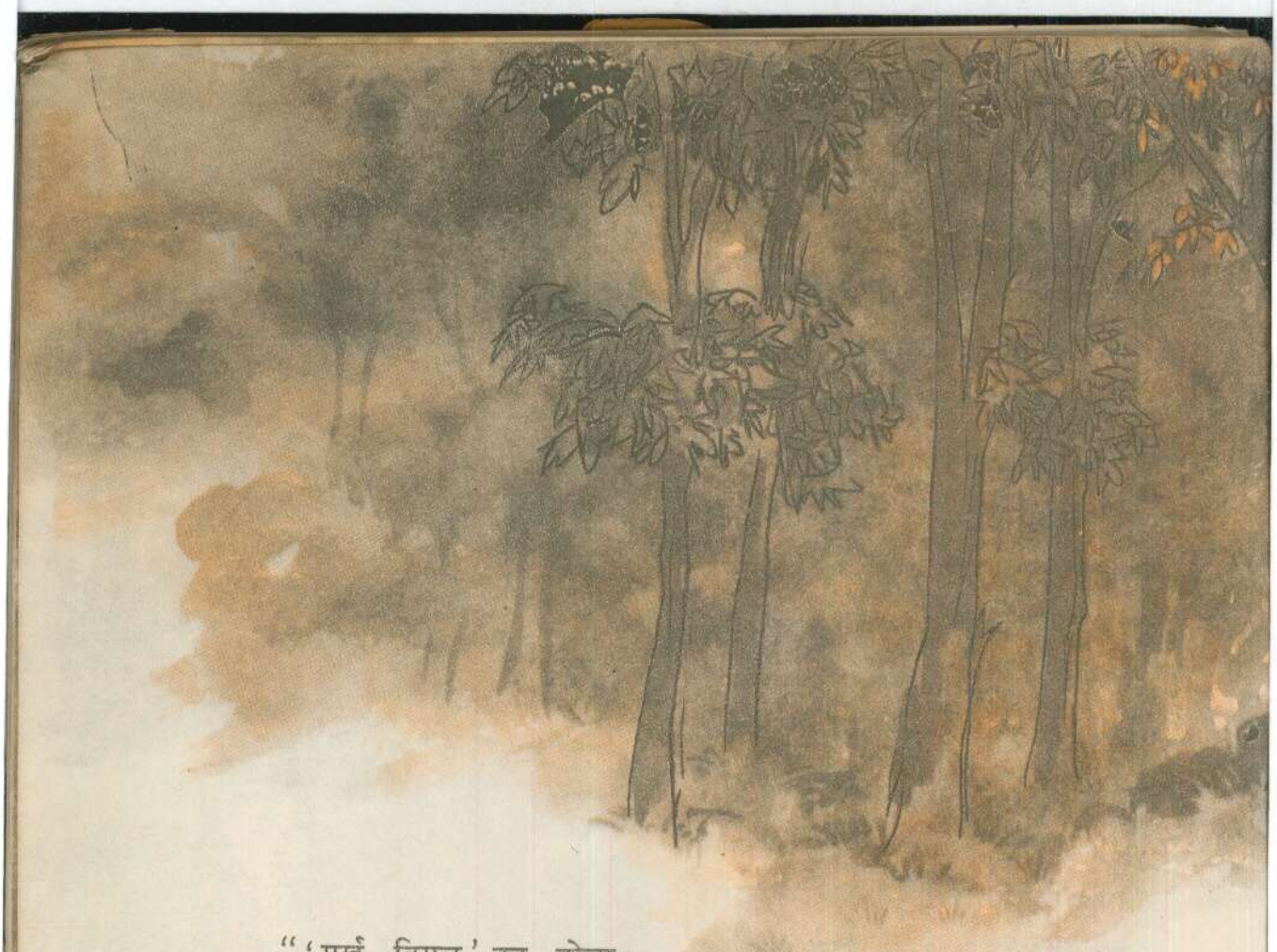

"'मूर्ख हिमल,' वह बोला—
"तुमने मुझे नदी में कूदने के लिए क्यों
ज़ोर दिया ?'"

भिखारी नहीं जानता था कि वह
हिमल से ही उसकी कहानी कह रहा है।

हिमल ने उसे कहानी के लिए धन्यवाद दिया। वह बड़ी उत्सुकता से यह देखने के लिए रात की प्रतीक्षा करने लगी कि कहानी वास्तव में ही सत्य है या नहीं।

रात होने पर हिमल नदी के किनारे जाकर झाड़ियों में छिप गई। वह प्रतीक्षा करने लगी। थोड़ी देर पश्चात् जलूस आया। हिमल ने देखा कि जलूस बिलकुल वैसा ही था जैसा कि भिखारी ने वर्णन किया था।

जब सबके चले जाने पर वहाँ नागराय और उसके सेवक ही रह गए तो हिमल जाकर नागराय के पैरों पर गिर पड़ी।

"यह रही तुम्हारी बेवकूफ हिमल," वह बोली—"मेरे स्वामी, मेरी गलती क्षमा कर दो।"

नागराय अचम्भित सा रह गया पर वह हिमल को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने उसे बाजुओं में कस लिया।

"तुम्हें पता नहीं था," वह बोला—"कि मैं नागों का राजकुमार हूँ। मैं संसार में मानवों में रहना चाहता था, लेकिन मेरे मित्र और सम्बन्धी मुझे नागलोक लौटाना चाहते थे। उन्होंने ही तुम पर यह चाल खेली जिस से तुम

kissekahani.com

मुझे नदी में घुसने के लिए मजबूर करो और फिर वे मुझे नागलोक में घसीट कर ले जा सकें। हिमल तुम नहीं समझ सकतीं कि तुम्हारे बिना मुझे कितना बुरा लगता रहा है।" "तुम नाग राजकुमार हो !" वह आश्चर्य से बोली—"तब कोई आश्चर्य नहीं कि तुम इतने महान हो। अब फिर मुझे अकेले मत छोड़ना। मुझे अपने साथ ले चलो। तुम्हारे साथ मैं कहीं भी जाने को तैयार हूँ।"

"तुम नागलोक में नहीं चल सकतीं," नागराय बोला—"वहाँ कोई मनुष्य नहीं है, हम सब साँप हैं। हम मनुष्य का रूप अपनी इच्छा से लेते हैं।"

"तब तुम मेरे पास से मत जाओ," हिमल रोकर बोली।

"मुझे तो वापिस जाना ही है," राजकुमार ने कहा—"यह सेवक मुझे अपने साथ ले जाने के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"तब मुझे भी साथ ले चलो," हिमल ने फिर कहा।

राजकुमार ने थोड़ी देर तक इस बात पर विचार किया।

"अच्छा," वह बोला—"मेरे साथ आओ। मैं अपने माता-पिता से आज्ञा माँगूँगा कि बाहर दुनिया में आकर नागराय के रूप में रह सकूँ। आशा है वह मुझे आने देंगे। नागराय हिमल को भी नागलोक में ले गया। उसे देखने के लिए नाग चारों ओर इकट्ठे हो गए।

"यह हिमल है," नागराय ने परिचय दिया—"मैंने इससे विवाह किया था। मैं चाहता हूँ कि आप सब लोग भी वायदा करो कि इसे किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाओगे।"

"साँपों के साथ मनुष्य कैसे रह सकता है ?" एक नाग राजकुमारी ने पूछा।

"वह यहाँ नहीं रहेगी," नागराय ने उत्तर दिया "वह वापिस जायेगी और मैं उसके साथ जाऊँगा। मैं तो केवल अपने माता-पिता की आज्ञा लेने आया हूँ।"

हिमल को नाग कन्याओं के पास छोड़कर राजकुमार अपने माता-पिता

kissekahani.com

से मिलने चला गया। लौटने पर उसने देखा कि हिमल को ज़हर दे दिया गया है और थोड़ी देर में ही उसकी मृत्यु हो गई।

नागराय बड़ा दुखी हुआ। वह हिमल के शरीर को नदी के किनारे ले गया। उसने वहाँ उसे झाड़ियों में लिटा दिया और फूलों से ढक दिया। वह उसे हर रोज़ ताज़े फूलों से ढक देता।

एक योगी एक दिन उस रास्ते से गुज़र रहा था। उसने सुन्दर हिमल के मृत शरीर को फूलों से ढके हुए देखा। इतनी छोटी आयु की लड़की को मरे हुए देखकर उसे बड़ा दुःख हुआ। शरीर को अच्छी तरह से देखने पर उसे पता चला कि उसे ज़हर दिया गया है। योगी के पास ऐसी शक्ति थी जिससे वह

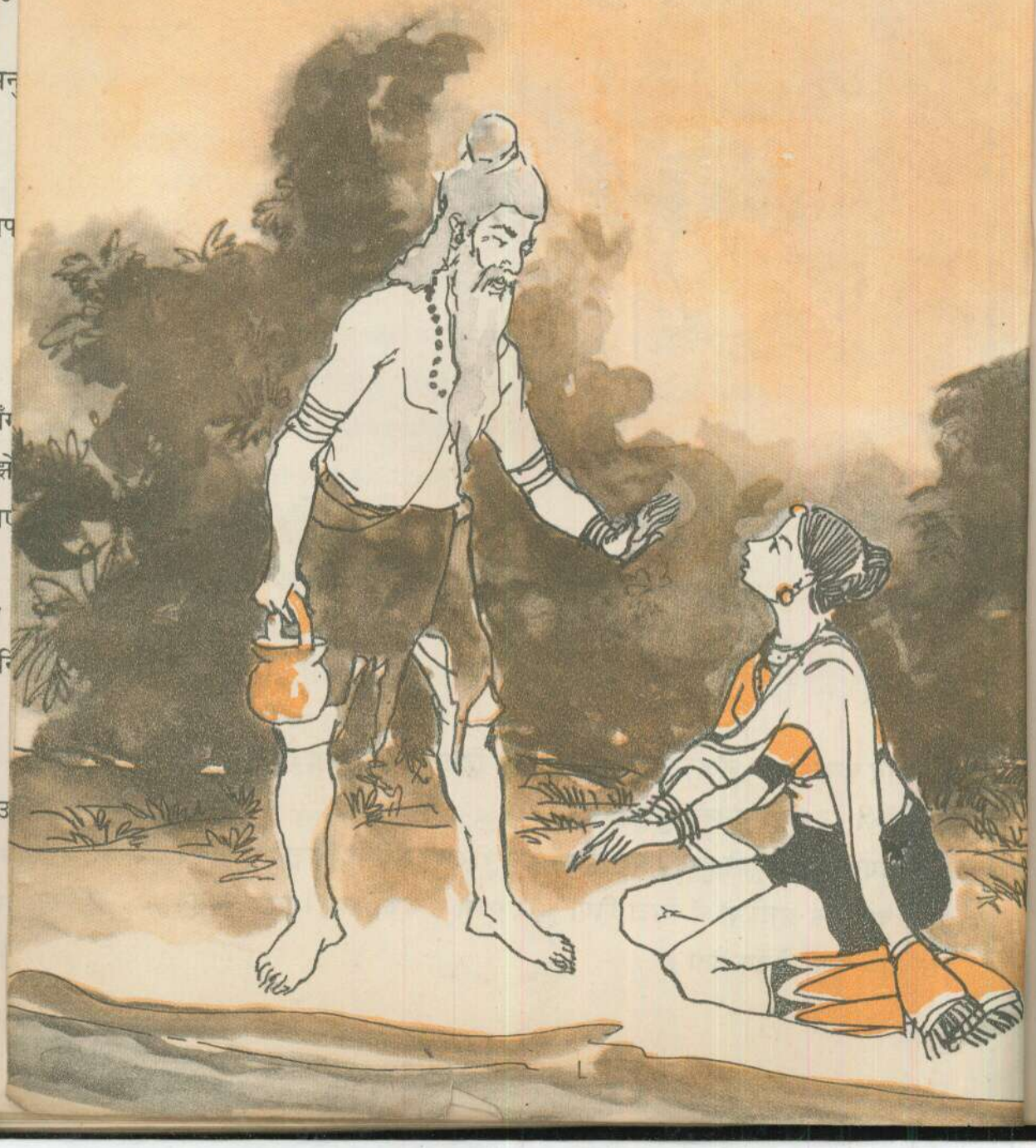

मल के
ो मरे
ो पता
से वह

ज़हर का प्रभाव दूर कर सकता था। उसने मन्त्र से ज़हर का प्रभाव दूर कर के हिमल को फिर जीवित कर दिया।

हिमल उठ बैठी। उसने योगी को बताया कि वह कौन है और उसकी ऐसी दशा कैसे हुई।

"मुझे विश्वास है," योगी बोला—"कि तुम्हारा पति ही प्रतिदिन यहाँ आता है और तुम्हें ताज़े फूलों से ढक जाता था। वह आज भी अवश्य आयेगा। तुम उसकी प्रतीक्षा करना चाहती हो या मेरे साथ अपने पिता के पास चलना चाहती हो?"

"आप की बड़ी कृपा होगी यदि आप मुझे नागराय की प्रतीक्षा करने दें।" हिमल ने उत्तर दिया।

"ठीक है, चलो हम छिप जायें और देखें कि तुम्हारा शरीर वहाँ न पाकर वह क्या करता है," योगी बोला।

वे एक झाड़ी के पीछे छिपकर प्रतीक्षा करने लगे। थोड़ी देर में नागराय ताज़े फूल लिए हुए वहाँ आया। जब उसने देखा कि हिमल का शरीर वहाँ से गायब हो गया है तो वह ज़मीन पर गिरकर रोने लगा।

हिमल ने दौड़कर उसे बाहों में उठा लिया।

"मेरे स्वामी उठो," वह चिल्लाई—"तुम्हारी हिमल यहाँ है। एक सिद्ध महात्मा ने मुझे फिर से जीवित कर दिया है। वे हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

नागराय ने हिमल का आलिंगन किया और वे दोनों योगी के पास आशीर्वाद लेने के लिए गए। वे योगी के पैरों पर गिर पड़े और योगी ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

नागराय और हिमल वापिस हिमल के पिता के पास आ गये। राजा ने बहुत प्रसन्नता से उनका स्वागत किया। नागराय फिर वापस नागलोक न गया। वह और हिमल बहुत वर्षों तक इकट्ठे आनन्दपूर्वक रहते रहे।

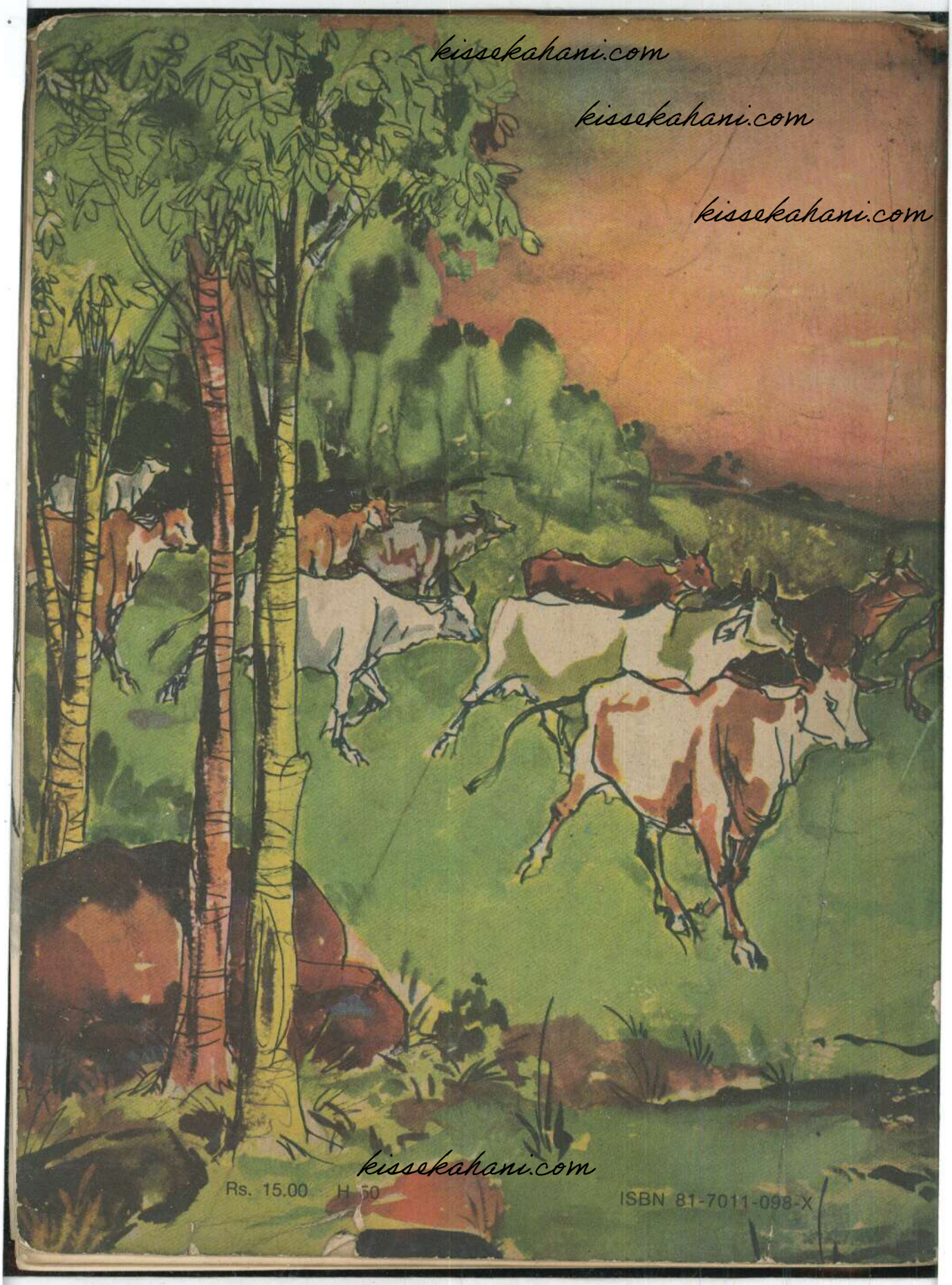

kissekahani.com
kissekahani.com
kissekahani.com
kissekahani.com

Rs. 15.00 H 50

ISBN 81-7011-098-X